Indian J. Soc. & Pol. 13 (02):123-126: 2026 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
31 July 2026 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

भारत में महिला आंदोलन की प्रकृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

राखी सिंह[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, सतीकुण्ड, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

ABSTRACT

जब मनुष्य सामूहिक जीवन से संबंधित व्यवहारों को अन्य लोगों के साथ मिलकर करता है तथा जिन व्यक्तियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से केवल समूह की इच्छाओं को पूरा करने के लिए जुड़ता है, जिनकी सहभागिता अपेक्षाकृत असंगठित, अनिश्चित, अनियोजित तथा नियोजन हीन होती है। इस समूह के द्वारा किए गए व्यवहार सामूहिक व्यवहार हीन होती है। इस समूह के द्वारा किए गए व्यवहार सामूहिक व्यवहार कहालाते हैं जो अस्थाई होते हैं। ऐसे व्यवहारों को हम भीड़, जनविद्रोह, आदिम धार्मिक व्यवहार, सुधार आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलन, सामाजिक असंतोष आदि सामाजिक व्यवहार के विभिन्न रूप हैं। इस प्रकार से कोई भी सामाजिक आंदोलन एक ऐसी गतिविधि है जिसके माध्यम से वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन की चेष्टा की जाती है। इस तरह के कार्य करने वाले समूह अथवा वर्ग वर्तमान व्यवस्था से असंतुष्ट होते है जिसके के लिए वे व्यवस्था परिवर्तन के लिए आंदोलन करते है जो अहिंसक या हिंसक दोनो प्रकार की हो सकती है।

KEYWORDS: *सामाजिक आन्दोलन, महिला आन्दोलन, नारीवाद*

व्यवस्था परिवर्तन के लिए क्रांति या आंदोलन को अनेक राजनीतिक विचारकों ने आवश्यक माना जिसमें अरस्तू लॉक, मार्क्स, हन्ना अरेंट एवं गांधी जी इत्यादि ने महत्वपूर्ण विचार प्रदान किए। इन सभी ने व्यवस्था परिवर्तन के लिए आंदोलन को अत्यावश्यक माना और आंदोलन के साधनों के प्रकार के बारे में अपने महत्वपूर्ण विचार अभिव्यक्त किए। आंदोलन के उद्देश्य, उसके स्वरूप को निर्धारित करते हैं किंतु कभी–कभी परिस्थितियों भी उसके स्वरूप को निर्धारित कर देती हैं, जैसे– असहयोग आंदोलन शांतिपूर्ण रूप से चल रहा था किंतु परिस्थितियां ऐसी बनी कि चौरी–चौरा की हिंसा हो गई। इसलिए आंदोलन करने वाले को पूर्ण रूप से ज्ञात होना चाहिए कि किस उद्देश्य और किस मार्ग से चलते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। आंदोलन होने के लिए विवश होने वाले परिस्थितियों पर न तो कभी प्रबुद्ध वर्ग विचार करता है और न ही सत्ता वर्ग।

19वीं शताब्दी में यूरोप के लगभग सभी देशों में महिलाओं के कल्याण के लिए एक मुहिम चलाई गई और उन्हें सदी के अंत तक अनेक पुराने, अनैतिक प्रतिबंधों से मुक्ति भी मिली। इसी समय भारत में भी महिला कल्याण के लिए अनेक महापुरुषों ने आवाज उठाया था। चुंकि ब्रिटेन में महिलाओं को भारत से अधिक समानता और स्वतंत्रता मिला हुआ था, इसलिए अंग्रेजों ने इस विषय की तरफ अपना ध्यान दिया और भारतीय समाज–सुधारकों के तथ्यों को स्वीकार करना भी प्रारम्भ कर दिया। राजा राम मोहन राय के प्रयासों द्वारा सती प्रथा का अंत करना, पंडित रमाबाई के प्रयासों के फलस्वरूप बाल विवाह का अंत। इन मुख्य प्रथाओं के अंत के परिणामस्वरूप देश के अन्य सामाजिक प्रबुद्ध लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करना आरम्भ दिया था जिसका परिणाम यह हुआ कि महिलाओं से संबंधित सभी समस्याएं एक के बाद एक बाहर आने लगी और समाज बड़ी संख्या में लोग उसे ध्यान देने लगे जैसे– विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि। ईसाई मिशनरियों द्वारा शिक्षा के माध्यम से धर्मपरिवर्तन की घटनाओं के प्रतिक्रिया स्वरूप भारतीय लोगों ने महिला शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया। ज्योतिब फुले महिला शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयास कर रहे थे वहीं दूसरी तरफ ईश्वरचंद विद्यासागर द्वारा यह साबित किया गया कि विधवाओं के पुनर्विवाह पर लगा प्रतिबंध शास्त्र और धर्म संगत नहीं है।

देश की स्वतंत्रता के बाद सरकार द्वारा विकास योजनाओं के शुरूआती दौर में महिला भागीदारी को प्रमुखता से सम्मिलित किया गया परन्तु कालान्तर में महिला उत्थान के स्थान पर अन्य कार्यो को प्राथमिकता दी गई जिसके कारण महिला विकास का क्षेत्र कमजोर पड़ गया और लोग राष्ट्रवाद के विकास में महिला विकास को भूल गये और महिला विकास की गति धीमी पड़ गई, जिसका परिणाम यह हुआ कि देश में नैतिकता, सामाजिकता जैसे मूल्य का ह्रास हुआ, लैगिंक भेदभाव का पुनः विकास हुआ। लैंगिक अपराध देश में आज सबसे बड़े अपराधों में से है। उपरोक्त ऐतिहासिक आंदोलनों के उपरान्त आजाद भारत में भी अनेक आंदोलन हुए जिसका संबंध महिला विकास और उनके सुरक्षा से संबंधित रहे हैं जिसमें प्रमुख निम्नवत हैं –

(1) हिन्दू कोड बिल आंदोलन – भारतीय महिलाओ ंको संविधान द्वारा राजनीतिक व वैधानिक अधिकार प्रदान किए गए थे किन्तु सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से महिलाओं पर अभी अनेक अतार्किक

1: Corresponding Author

प्रतिबन्ध बने हुए थे, इसके साथ ही महिलाओं को अनेक प्रकार के वैधानिक अधिकार जो मिलना चाहिए था किंतु मिल न सका था। इस संदर्भ में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने लगभग 4 वर्ष के अथक अध्ययन और मनन के बाद हिंदू कोड बिल नाम से तैयार किया इस बिल का मुख्य कार्य हिंदुओं के लिए समान नागरिक संहिता का निर्माण करना था। प्रमुख नेताओं के विरोध के कारण यह अनेक वर्षो तक संसद में प्रस्तुत नहीं हो सका और इसे ही अनेक रूप में भिन्न–भिन्न करके कानून बनाया गया– हिंदू विवाह कानून हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, हिन्दू अभिभावक व अल्प वयस्कता, हिन्दू दत्तक कानून, तलाक कानून आदि। सरकार के इस कदम से अम्बेडकर बहुत अधिक नाराज हुए और कानून मंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया। इस घटना के पश्चात् महिला संगठनों ने देशव्यापी प्रदर्शन किया परन्तु सरकार के दमनात्मक रवैये के कारण यह आंदोलन धीर–धीरे कमजोर पड़ गया। असल में उस समय महिला आंदोलन के कमजोर पड़ जाने के पीछे एक महत्वपूर्ण कारण था, महिलाओं को उनके परिवार का समर्थन का न मिलना।

(2) तेलंगाना आंदोलन – यह आंदोलन किसान और कम्युनिस्टों के मिले–जुले योजना के अंतर्गत किया गया था जिसकी शुरूआत 1946 में ही हो गई थी। यह आंदोलन किसानों, मजदूरों और महिलाओं के द्वारा मिलकर किया गया था जो जमींदारों के शोषण का शिकार होते थे। हैदराबाद के निजाम और अन्य जमींदारों एवं उसके आदमियों द्वारा महिला कामकारों का न्यूनतम वेतन पर मजदूरी एवं शारीरिक शोषण किया जाता था जिसके कारण वे अपनी अस्मिता का बदला लेने के लिए हिंसक बन चुकी थी। यह आंदोलन सरकारी दमन के कारण भूमिगत रूप से गुरिल्ला युद्ध के रूप में हिंसक रूप से चलाया जाता था जो एक प्रकार से राष्ट्रदोह की श्रेणी में आता था जो एक प्रकार से राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में आता था इसी कारण से ही सरकार द्वारा दमनात्मक रवैया अपना इस आंदोलन को समाप्त किया गया।

(3) महाराष्ट्र में कामगार महिला आंदोलन – देश में अत्यधिक गरीबी और बेकारी के कारण 1960 के दशक में ग्रामीण भारत से बड़ी संख्या में मजदूर शहर की ओर प्रवासित हुए। इन मजदूरों में बड़ी संख्या में महिला मजदूर भी थी। महाराष्ट्र उस समय देश के औद्योगिक प्रान्त के रूप में अपनी अलग पहचान रखता था इसलिए यहाँ कम्पनियों में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध थे। यहाँ आने के बाद महिला कामगारों को अनेक यातनाओं और शोषण का सामना करना पड़ा। इस शोषणकारी व्यवस्था में खिन्न आकर महिलाओं ने अनेक छोटे–बड़े आंदोलन किए और अपने अधिकारो की मांग की जिसमें शिशु देखभाल कक्ष, समान वेतन, उनके साथ उचित व्यवहार, प्रसूति अवकाश, महिलाओं के लिए अलग शौचालय प्रबंध, अवैधानिक समझौता का बहिष्कार आदि। इन मांगों को लेकर चला महिला आंदोलन की मांगों को सरकार द्वारा इस दिशा में उचित नियम बनाया गया।

(4) बोध गया भूमि मुक्ति आंदोलन – महिलाओं के इस आंदोलन द्वारा बोधगया में एक मठ की बेनामी जमीनों को अपने नाम पर करने का आंदोलन चलाया गया। उनका मानना था कि वे उस जमीन पर मेहनत करके खेती करती है और अपना परिवार भी चलाती है अतः सरकार को वो भूमि उनके घर के पुरुषों के नाम न करके उनके नाम करनी चाहिए। सरकार द्वारा भी अंततः वो भूमि परिवार के महिला मुखिया के नाम किया गया।

(5) महंगाई एवं नवनिर्माण आंदोलन – सत्तर का दशक भारत के लिए राजनीतिक एवं सामाजिक रूप से अत्यधिक उथल–पुथल वाला रहा है। इस अस्थिर सामाजिक माहौल ने भारतीय युद्ध ने, प्राकृतिक आपदाओं ने, प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने इस तरह से देश को प्रभावित किया और महंगाई अपने चरम पर पहुंच गई थी जिसके परिणाम स्वरूप महाराष्ट्र आदि राज्यों के शहरी आबादी की महिलाओं द्वारा आंदोलन शुरु किया गया। कई राजनीतिक पार्टियों के समर्थन के फलस्वरूप इसका आकार देश व्यापी हो गया। गुजरात में इस आंदोलन को नवनिर्माण आंदोलन का नाम दिया गया। इस आंदोलन के परिणाम स्वरूप सरकारों द्वारा महंगाई नियन्त्रित करने के लिए कई नीतियां एवं कानून बनाए।

(6) चिपको आन्दोलन – देश में नारीवादी आंदोलन की शुरूआत महिला मुक्ति से हुआ था, किन्तु धीरे–धीरे यह समाज सुधार, राजनीतिक सुधार के साथ अब पर्यावरण संरक्षण की तरफ बढ़ चला था। इसी क्रम में चिपको आंदोलन का नाम आता है। देश की सामाजिक, राजनीतिक स्थिति के साथ ही आर्थिक स्थिति में तेजी से बदलाव हो रहा था, आर्थिक नीतियों के बदलाव का ही परिणाम था कि जंगलों की कटाई आरम्भ हो गई। उत्तराखण्ड में वनों की कटाई से किसी एक व्यक्ति को लाभ हो रहा था जबकि अप्रत्यक्ष रूप से समूचे विश्व को पर्यावरण नष्ट होने से हानि हो रही थी और प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय निवासियों को समस्या हो रही थी इस अप्राकृतिक कृत्य को रोकने के लिए सुंदरलाल बहुगुणा आगे आये। उन्होंने स्थानीय निराशा एवं रोष को एक आंदोलन का रूप दे दिया। इस आंदोलन में महिलायें वृक्ष काटने वालों के समक्ष आकर वृक्ष को गले लगा लेती थी। इसीलिए इस आंदोलन का नाम चिपको पड़ा। इस तरह का अनोखा आंदोलन उस समय के अन्य पर्यावरण चिंतको के लिए एक आदर्श उदाहरण बन गया था जिसे किसी भी अवस्था में अपनाया जा सकता था। लंबे संघर्ष के बाद इसमें सफलता मिली। वर्तमान में इसे पर्यावरणी समाजवादी आंदोलन से अधिक पर्यावरणीय नारीवादी आंदोलन के रूप में जाना जाता है।

(7) गुलाबी गैंग आंदोलन – गुलाबी गैंग आंदोलन भारत में सशक्त नारीवाद का द्योतक बन का उभरा है। यह गैंग उत्तर प्रदेश में पिछड़ी जाति के महिलाओं का संगठन है। जिसकी मुखिया सम्पतलाल हैं जो खुद पिछड़ी जाति से संबंध रखती है। यह संगठन बुंदेलखण्ड में सक्रिय है। इस संगठन ने नये भारत की नई तस्वीर प्रस्तुत की है। इस संगठन की महिलाओं के हाथ में डंडा एवं रस्सी रहता है और गुलाबी वस्त्र धारण करती है जो भ्रष्ट दुराचारी लोगों को रास्ते पर लाने के लिए किया है। इनके सामने अत्याचार हो तो वे प्रतिक्रिया अवश्य करती हैं, चाहे वह शांतिपूर्ण हो

या लाठी के दम पर। अपने सख्त व्यवहार के कारण सम्पतलाल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हो गई हैं।

(8) असम महिला आंदोलन – विदेशी घुसपैठ के द्वारा सामजिक अंसतुलन, सेना द्वारा चलाये जा रहे आतंक विरोधी अभिपान के कारण असम की महिलाओं को अनेक सामाजिक एवं शारीरिक हिंसा का सामना करना पड़ा जिसके कारण 1984 में वे असम जाग्रत महिला परिषद के संगठन में एकत्रित होकर आंदोलन प्रारम्भ कर अपनी समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने का प्रयास किया। अत्यंत हिंसक एवं विषम परिस्थितियों ने एक और सशस्त्र विद्रोल 'उल्फा' को जन्म दिया जो देश के आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा के लिए मुसीबत बन गया। असमिया महिलाओं ने कुछ संगठन जैसे करबी विमेन्स एसोसिएशन, आदिवासी महिला कल्याण संघ आदि इसके माध्यम से पीड़ित महिलाओं को लाभ पहुँचाया जाता और महिला आंदोलन को सहायता। इस आंदोलन को सभी कम्युनिस्ट पार्टियों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त था और कालान्तर में इन्होंने अपनी सरकार भी बनाई परन्तु महिलाओं के विषय में कोई विशेष सुधार इस सरकार के द्वारा भी नहीं किया जा सका।

(9) नक्सल विद्रोह एवं महिला– नक्सलवाद भारत में साम्यवाद के विकृत रूप में उपस्थित है। सत्ता एवं सामंतवाद के विरूद्ध सशक्त विद्रोह भारत के उन राज्यों में अधिक हुआ जहाँ शोषण एवं दमनकारी नीतियां अपनाई जाती थी। आंध्रप्रदेश में महिलाएं श्राब निषेध आंदोलन का पूरे प्रदेश फैला हुआ था। उनके साथ नक्सली विद्रोही भी समर्थन कर रहे थे क्योंकि अधिकतर शराब विक्रेता जमींदार थे। अनेक जगह हिंसक झड़पे हुई। इन गतिविधियों के कारण शराब बिकने और पीने वालों में कमी आई। इस तरह से सशस्त्र नक्सल विद्रोह के समर्थन से सामाजिक क्रांति का उदय हुआ, जिसमें अन्य राज्यों की महिलाएं भी प्रभावित हुई।

तमिलनाडु में नक्सल प्रभाव बहुत अधिक रूप से नहीं था किंतु सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से इस विद्रोह का हस्तक्षेप रहता था। यहां की महिलाओं के शोषण के रूप में कम मजदूरी देना, घरेलू हिंसा एवं बलात्कार मुख्य था। विमेंस लिबरेशन फ्रंट नामक संगठन के माध्यम से महिलाएं पूरे प्रदेश भर में शोषणकारी तत्वों के खिलाफ हिंसात्मक एवं अहिसात्मक दोनों प्रकार से आंदोलन कर रही थी और इनका समर्थन प्रदेश के साम्यवादी संगठन कर रहे थे।

बिहार में नक्सल विद्रोह से शोषित महिलाओं को बल मिला यहाँ महिलाओं ने 'नारी मुक्ति संघ' नाम के एक संगठन का निर्माण किया जो नक्सल विद्रोह से प्रेरित था। इस संगठन ने बिहार से पुरुषवादी मानसिकता के खिलाफ आंदोलन एवं सामाजिक एवं आर्थिक विकृति को दूर करने का जिम्मा उठाया। संगठन ने महिला के साथ मारपीट करने वाले, दहेज प्रताड़ना, बलात्कार करने वाले किसी भी व्यक्ति को पकड़ कर सामाजिक रूप से अवमानना एवं मृत्युदण्ड तक दिया जाता था।

(10) मणिपुर आंदोलन – मणिपुर में महिलाओं द्वारा भारत में तीन प्रकार के आंदोलन स्वतंत्रता पूर्व चलाये गये थे। 1904 का आंदोलन जिसे मध्यम वग्रिय एवं निम्न वर्गीय महिलाओं ने शोषण के खिलाफ, 1939 में व्यापार करने वाली महिलाओं का आंदोलन प्रमुखता से चलाया गया। तीसरा 1970 के बाद आंदोलन जो भारतीय सेना के खिलाफ चलाया गया था जिससे अधिकतर यही आरोप रहता था कि सेना एवं पुलिस के जवान घुस पैठियों, विद्रोही गुहों के तलाशी के नाम पर उनके साथ अनैतिक व्यवहार था। इसके अलावा सामाजिक कुप्रथाओं के विरूद्ध भी मणिपुर महिलाओं ने कई बार आंदोलन किया है जो बहुविवाह, शराब, घरेलू हिंसा, वेश्यावृत्ति आदि विषयों पर ऊपर केन्द्रित था।

(11) नर्मदा बचाओ आंदोलन – देश की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगीकरण के कारण बिजली की समस्या को दूर करने के संदर्भ में सरकार द्वारा नर्मदा नदी पर बांध बनाने का फैसला लिया जो तीन राज्यों गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में बना था जिससे 15 लाख लोग प्रभावित हो रहे थे। विस्थापित होने वालों में सबसे अधिक किसान एवं आदिवासी थे और लगभग 50 हजार हेक्टेयर जंगल डूबने का अनुमान था। इस तरह उस स्थान पर मात्र जंगल नहीं डूबने वाला था बल्कि जंगल के साथ ही जमीन, घर, जीविका के साधन, संस्कृति, स्मृति और सांस्कृतिक पहचान डूबने जा रहा था। चूंकि यह जंगल का क्षेत्र था अतः वहां नक्सल विद्रोह के सक्रिय होने का अवसर अधिक था किंतु मेधा पाटेकर के नेतृत्व में नर्मदा बचाओ आंदोलन को पूर्णतः अहिंसक चलाने का प्रयास किया गया। कुछ दशकों पहले पर्यावरणीय स्त्रीवाद की शुरूआत चिपको आंदोलन के साथ हुआ और नर्मदा बचाओ आंदोलन में मुख्य हुआ जिसने यह स्थापित कर दिया कि स्त्रियों के शोषण एवं प्रकृति के बीच एक अहम रिशता है। मेधा पाटेकर का कहना था कि नर्मदा नदी विकास परियोजना को शुरू होने से पूर्व प्रभावित होने वाले लोगों की व्यवस्था की जाय। 1985 से आरम्भ में नर्मदा बचाओ आंदोलन एक व्यापक जन आंदोलन बना जिसमें महिलाओं ने ही प्रमुख भूमिका निभायी। इस आंदोलन को महिला आंदोलनों में प्रमुख स्थान दिया जाता है।

महिला आंदोलनों की प्रकृति का विश्लेषण –

भारत दुनिया में सबसे प्राचीनतम संस्कृति सभ्यता वाला देश है। यहाँ महिलाओं को देवी का दर्जा दिया जाता है। महिला पुरुष के मध्य किसी भी प्रकार के अप्राकृतिक भेद को समाज द्वारा अस्वीकृत करने का आदर्श प्रतिमान रहा है। परिस्थितियों के बदलने विदेशी आक्रंताओं के हमले, आपसी फूट एवं द्वेष के कारण विदेशी भाषा, संस्कृति और मूल्य को भी भारतीय जनमानस पर अधिरोपित किया गया जिसके परिणाम स्वरूप बड़ी संख्या में हिंसा, धर्मांतरण और द्वेष ने जन्म लिया जो बदस्तूर आज भी जारी है। देशी संस्कृति पर संक्रमण होने से सबसे बड़ा नुकसान महिलाओं की दृष्टि से हुआ क्योंकि महिला सम्मान है और सम्पत्ति भी है। इसलिए महिलाओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रकार के कुप्रथाओं को बढ़ावा दिया गया, इसके अतिरिक्त हमारे देशज समस्याओं ने

कुंठाओं ने, अंधविश्वासों ने भी महिलाओं के लिए समस्याएं उत्पन्न की। आजादी के बाद महिलाओं को स्वदेशी शासन से यह उम्मीद थी कि उनके जीवन का कायाकल्प हो जाएगा कि स्वतंत्रता के शुरूआती दिनों से ही महिलाओं को यह लगने लगा था कि स्वदेशी शासन में भी उनके लिए किसी विशेष बदलाव करने की मंशा नहीं है। सत्ता पर बैठा व्यक्ति हमारी दशा और हमारे अधिकारों के हनन को नहीं देख पा रहा है इसलिए अनेक विपक्षी पार्टियों और संगठनों को साथ लेकर महिलाओं ने अपनी आवाज सत्ता तक पहुँचाने के लिए विभिन्न आंदोलन किया जो निम्न प्रकार से हैं –

(1) अहिंसक आंदोलन– अहिंसा एवं शांति का संदेश भारत ने समस्त विश्व को दिया। भारत के सभी पुरुष धर्मो ने शांति और अहिंसा को मानव जीवन का मूल कर्तव्य बताया है इसलिए आंदोलन में भी अहिंसक प्रवृत्ति का खास प्रभाव रहा। इसके अतिरिक्त गांधी जी ने देश की आजादी में शांति और अहिंसा के माध्यम से क्रूर हृदय को परिवर्तित करने का प्रयोगिक आंदोलन किया था। गांधी जी के साथ देश भर से लाखों महिलाओं ने उनके अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था इसलिए बहुत बड़ी संख्या में भारतीय जनमानस के मस्तिष्क में अहिंसा का भाव बना हुआ था। अहिंसा साहसी लोगों का गुण होता है इसे गांधी जी ने कहा और साबित किया इन्हीं के साथ महिलाओं के बारे में धारणा बनी कि महिलाएं भी साहसी होती है इसका प्रमाण अनेक आंदोलनों के माध्यम से दिया है। महिलाओं ने अपने आंदोलन मे धरना प्रदर्शन, मार्च निकालना, सत्याग्रह, अनशन इत्यादि किया।

(2) हिंसक आंदोलन – स्वतंत्र भारत में महिला आंदोलन को हिंसा का रूप देने में तत्कालीन परिस्थितियां और शोषणकारी व्यवस्था का रहा है। अधिकतर हिंसात्मक आंदोलन नक्सली आंदोलन से प्रेरित रहता था जिसमें हथियार–उठाकर समाज को अपनी शक्ति से परिचित कराने का प्रयास किया। जैसे गुलाबी गैंग ऐसी महिलाओं का समूह है जिसमें अधिकांश महिलाएं ऐसी है जिनके साथ किसी न किसी रूप में अमर्यादित व्यवहार, उनके अधिकारों का हनन, भेद–भाव, प्रशासन द्वारा सुनवाई न होना आदि समस्याएं हुई हैं। गुलाबी गैंग की वह घटना बहुत चर्चित हुआ जिसमें इस गैंग ने उपजिलाधिकारी और थानेदार को बंधक बना लिया और पुलिस वालों को इन महिलाओं ने दौड़ा–दौड़ा कर लाठी से मारा।

(3) सामाजिक – आधुनिक भारत में महिलाओं द्वारा किए गये आंदोलनों में सामाजिक उत्थान का भी एक तत्व निहित है। महिलाओं ने सामजिक बुराई समाप्त करने के लिए आंदोलन किया। महिलाओं के आंदोलन में स्त्री शिक्षा, स्त्री सम्मान, दहेज निषेध, सामाजिक सदभाव, सामाजिक न्याय, नशा उन्मूलन आदि महत्वपूर्ण विषय शामिल है।

(4) राजनीतिक – महिलाओं ने राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी का भारतीय राजनीति को प्रभावित किया है। स्वतंत्र भारत की राजनीति में महिलाओं ने अपनी सूझ–बूझ से अपना लोहा मनवाया जिनमें इन्दिरा गांधी, मेनका गांधी, सुषमा स्वराज, जयललिता, उमा भारती, सोनिया गांधी, मायावती, ममता बनर्जी जैसी महिलाओं ने भारतीय राजनीति की दशा और दिशा दोनों बदल दिया। अन्ना हजारे के जनलोकपाल विधेयक पर के अनशन में महिलाओं के अद्भुत साहस और समर्थन और मीडिया की भूमिका के कारण यह अनशन एक जन आंदोलन बन गया।

(5) पर्यावरणीय– भारत में महिलाओं द्वारा किए गये आंदोलनों में पर्यावरणीय आंदोलनों को प्रमुखता से याद किया जाता है। पर्यावरण के संरक्षण का जैसा अनूठा उदाहरण भारत में महिलाओं ने प्रस्तुत किया वह संसार में कहीं नहीं हुआ था। चिपको आंदोलन, साइलेंट वैली आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन एपिकों आंदोलन आदि में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

महिलाओं ने अपने अपने अधिकारों की सुरक्षा के लिए समय–समय पर अहिंसात्मक एवं हिंसात्मक आंदोलन किया और अपने उद्देश्य को प्राप्त किया। महिला कल्याण के उद्देश्य से शुरू हुए आंदोलन में महिला विकास एवं महिला सशक्तिकरण तक का सफर तय किया है। देश में महिलाओं के अधिकार और व्यवहारिक रूप से महिलाओं को मिले अधिकार और सम्मान में अभी भी अंतर विद्यमान है किंतु महिलाओं ने इस अंतर को बहुत हद तक सीमित कर दिया है।

REFERENCES

कुमार, आर. (2005), *'स्त्री संघर्ष का इतिहास 1800–1990'* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

त्रिपाठी, के. (2004), *'जब स्त्रियों ने इतिहास रचा',* नवजागरण प्रकाशन, नागपुर।

करात, वृन्दा (2008) *'भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति',* श्याम बिहारी राय ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली।

पाठक, एस.(2022), *'स्त्री एवं प्रकृति पर्यावरणीय स्त्रीवाद के आयाम',* प्राकृत भारतीय अकदामी, जयपुर

सिंह वी.एन. (2007), *'भारत में सामाजिक आंदोलन'*, रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली।

शर्मा, डॉ. वी (2002), *'आधुनिक भारत में राजनैतिक प्रतिरोध',* कनिष्का पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

वशिष्ठ, प्रो0 एस0 (2010) *'महिला सशक्तिकरण',* कल्पना प्रकाशन, नई दिल्ली

त्रिपाठी, प्रो0 एम0 (2010), *'महिला विकास एक मूल्यांकन',* ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

शर्मा, एस. *'भारतीय महिलाओं की दशा',* आधार प्रकाशन, हरियाणा